



Original Article

पिपली लाइव्ह सिनेमा में चित्रित किसान समस्या

इरफान बाळासो नायकवडे

काकासाहेब चव्हाण कॉलेज, तळमवाले

तह- पाटण, जि- सातारा

Manuscript ID:

IJAAR-C130378

ISSN: 2347-7075

Impact Factor – 8.141

Volume - 13

Issue - 3

January – February 2026

Pp. 406 - 410

Submitted: 05 Feb. 2026

Revised: 17 Feb. 2026

Accepted: 20 Feb. 2026

Published: 28 Feb. 2026

Corresponding Author:

इरफान बाळासो नायकवडे

Quick Response Code:



Website: <https://ijaar.co.in/>



DOI: 10.5281/zenodo.22787467

DOI Link:

<https://doi.org/10.5281/zenodo.22787467>



Creative Commons



शोध सार:

आज हम इलेक्ट्रॉनिक युग में जीवन ज्ञापन कर रहे हैं। क्योंकि सुबह से शाम तक जितनी भी क्रियाएँ हम जीवन को सुचारु रूप से बनाने के लिए करते हैं उन सभी में अधिक रूप से इलेक्ट्रॉनिक साहित्यों का प्रयोग बढ़ता चल दिखाई देता है। सुबह उठने के पश्चात हम अपनों से ज्यादा अपने मित्रों या चाहनेवालों को सुप्रभात आदि के संदेश हमारे साथ हमेशा रहनेवाले भ्रमणध्वनि के माध्यम से भेजते हैं। और अधिक समय तक इसका प्रयोग दिन भर लगातार करते रहते हैं। कहने का तात्पर्य इतना है कि आज पढ़ाई- लिखाई भी इलेक्ट्रॉनिक रूप से हो रही है। उसी प्रकार बहुतसे बदलाव हम इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों का प्रयोग करके ला सकते हैं। लोगों पर फिल्म, टेलीविजन सीरियल आदि के माध्यम द्वारा भी बहुत बदलाव आता देखा जा सकता है।

साहित्य और समाज का गहरा संबंध है। साहित्य समाज का दर्पण है ऐसा महान विद्वानों ने कहा है। जो समाज में घटित होता है उसका प्रतीबिंब साहित्य में उमटता है। या कभी- कभी अपेक्षित समाज का चित्रण भी साहित्य के माध्यम से साहित्यकार अपने साहित्य में चित्रित करने का प्रयास करता है। साहित्य के आधार पर ही सिनेमा, नाटक, वेबसीरीज आदि अनेक माध्यम से समस्या को मनोरंजनात्मक या अन्य शैली में प्रस्तुत कर उसपर प्रकाश डालने का कार्य कलाकार या निर्देशक करते हैं।

बीज शब्द: कलाकार, निर्देशक, मीडिया।

Creative Commons (CC BY-NC-SA 4.0)

This is an open access journal, and articles are distributed under the terms of the Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 4.0 International License (CC BY-NC-SA 4.0), which permits others to remix, adapt, and build upon the work non-commercially, provided that appropriate credit is given and that any new creations are licensed under identical terms.

How to cite this article:

इरफान बाळासो नायकवडे. (2026). पिपली लाइव्ह सिनेमा में चित्रित किसान समस्या. *International Journal of Advance and Applied Research*, 13(3), 406 - 410. <https://doi.org/10.5281/zenodo.22787467>

यह एक प्रभावी माध्यम माना गया है। दर्शक जब स्क्रीन के सामने बैठता है तो वह कुछ दृश देखने के बाद ही अधिक जानकारी प्राप्त करता है। कलाकारों का रूप और उनके जीवन जीने का ढंग, बोलने का ढंग, वाक्यों को बोलने

की गति आदि अनेक गतिविधियों से दृश्य प्रभावकारी बनते हैं।



उद्देश्य:

1. सिनेमा और साहित्य के संबंध को समझना।
2. साहित्य के महत्व को समझना।
3. सिनेमा, नाटक के प्रभाव को समझना।
4. पिपली लाइव इस सिनेमा में चित्रित 'किसान आत्महत्या' इस समस्या पर प्रकाश डालना।

आधुनिक युग में किसी भी विषय पर सिनेमा और नाटक बनते नजर आ रहे हैं। इसके निर्माण में पूर्वनियोजन के रूप या आधार स्तम्भ के रूप में साहित्य ही कार्य करता है। आज 21 वीं सदी में भी व्यक्ति के जीवन में अनेक समस्या हैं। जैसे- जैसे उसका जीवन आगे बढ़ रहा है या वह प्रगति की राह पर चल रहा है वैसे- वैसे अनेक समस्या भी उसके सामने आ खड़ी हो रही हैं। लेकिन आज तक जो समस्या अनेक वर्षों से हमारे समाज के ऊपर कलंक बन कर रह गई है वह है किसान की आत्महत्या।

जी हाँ किसान आत्महत्या बिल्कुल ही हमारे समाज पर एक कलंक है। एक ओर हम जय जवान, जय किसान के नारे लगाते हैं। लेकिन उसके द्वारा बहाए गए पसीने का मुआवजा सरकार के द्वारा नहीं दिया जाता। जब उसके द्वारा उगाई गई फसल बाजार में बेचने के लिए आती है तो सरकार के ठेकेदार बहुत ही कम दामों में उसकी अदाइगी करते हैं। और फिर वही फसल ठेकेदार उसे अधिक दामों में आम लोगों को बेचता है।

जो रकम किसान को मिलती है उसमें उसकी नई फसल के बीज भी बहुत संघर्ष से आ पाते हैं। अंग्रेज सरकार ने तो किसानों का सबसे अधिक शोषण किया। लेकिन जब देश स्वतंत्र हुआ तो हमारे ही लोगों ने उसे आगे बढ़ने नहीं

दिया। इसलिए वह आज अपने अधिकार के लिए लड़ता दिखाई देता है। देश का पेट भरनेवाला स्वयं भूखा नजर आता है। सिर्फ भूखा नहीं वह बेबस होकर आत्महत्या तक पहुंच गया है।

इसलिए किसान समस्या यह एक समाज पर लगा कलंक है। वह अगर हताश रहेगा तो आनेवाले समय में हमें अनाज के लिए न जाने कितनी जद्दोजहद करनी पड़ सकती है इसके बारे में हम सोच भी नहीं सकते हैं। जय जवान, जय किसान के नारे लगाने से पहले हमें उसकी सहायता की सोचनी चाहिए। उसे पहले सक्षम बनाना पड़ेगा। सभी को मिलकर उसके हित की योजनाओं को अपनाना पड़ेगा। योजना पूरी तरह गरीब और असहाय किसान तक पहुंचाना होगा। वर्तमान में तो हम देखते हैं कि बड़े-बड़े उद्योगपति लोगों का कर्जा चुटकियों में माफ किया जाता है। कोई अमीर तो देश में बैंक का कर्जा निकालकर भाग जाता है लेकिन उसे शिक्षा तक कोई नहीं लेकर जाता। उल्टा उसे दूसरे देश में जाने के लिए कई राजनेता सहायता पहुंचाते हैं। वहीं दुसरी तरफ अन्नदाता फसल का मुआवजा पूरा न मिलने के पश्चात कर्ज के बोझ के कारण आत्महत्या का कदम उठाता है तो सरकार उसकी सहायता करने के बजाय अलग-अलग वक्तव्यों में व्यस्त नजर आती है। पत्रकारिता जो लोकतन्त्र का चतुर्थ स्तम्भ कहलाता है वह भी आज के दौर में सिर्फ प्रसिद्धि और टीआरपी बटोरने की ओर अग्रसर दिखाई देता है। एक बात महत्वपूर्ण है कि संवेदनशीलता खत्म होती जा रही है। यह सोचनेवाली बात है। राजनीति की बदलती परिभाषा के कारण संवेदनशीलता, सेवाभाव, करुणा जैसे जीवन मूल्य की कमी समाज में दिखाई देती है।



साहित्य समाज का दर्पण है। निश्चित रूप से वह अपना कार्य प्रामाणिकता से करता आ रहा है। नाटक और सिनेमा का आधार साहित्य ही है। साहित्य में सामाजिक समस्याओं को प्रथम स्थान प्राप्त होता है क्योंकि साहित्य सिर्फ मनोरंजन नहीं करता वह समाज में सजगता लाता है। समाज को दिशा देने का कार्य साहित्य ही प्रामाणिकता से करता है। साहित्य के माध्यम से जो दिशादर्शक सिनेमा बनाता है वह बिल्कुल ही सराहना का कारण बनता है। जैसे 'मदर इंडिया', 'गदर', 'गंगाजल', 'तारे जमीन पर' इन फिल्मों में अलग-अलग समस्याओं को लेकर समाज में मनोरंजन के साथ जागरूकता लाने का कार्य किया है। समाज के हर समस्या पर प्रकाश डालने का कार्य साहित्य के द्वारा सिनेमा और नाटक के माध्यम से होता रहा है। और यह कार्य हमेशा चलता रहेगा।

यहाँ पर हम किसान की आत्महत्या की समस्या को दर्शाती एक फिल्म जो 21 वीं सदी की बहुत ही चर्चित फिल्म रही वह हैं 'पिपली लाइव'। यह फिल्म 'अनुषा रिजवी' के द्वारा लिखित है। अनुषा रिजवी एक भारतीय फिल्म निर्देशक और पटकथा लेखिका हैं। और 'पिपली लाइव' यह फिल्म उनकी पहली फिल्म मानी जाती है। "अनुषा रिजवी का जन्म 13 मार्च 1978 को हुआ है।"¹

'पिपली लाइव' इस फिल्म का मुख्य विषय है किसान समस्या। इस फिल्म में अन्य समस्या पर व्यंग किया गया है। जो मुख्य विषय के सहायक के रूप में दिखाई देते हैं।

यह फिल्म बहुचर्चित रही है। आज भी यह उतनी ही प्रसिद्ध है। इस फिल्म में ग्रामीण जीवन के साथ किसान का समस्याग्रस्त जीवन दिखाया गया है। पिपली लाइव में भारत के गांवों में रहनेवाले गरीब किसानों का वर्णन है। इन आम

जनता के बारे में कोई भी गंभीरता से नहीं सोचता है। लेकिन असल में यहीं हमारा असली भारत छिपा है। गाँव की बोलियाँ, परंपरा, संस्कृति आदि अपने-आप में विशेष होती है। और इसके प्रति निश्चित रूप से हमारे मन में सम्मान की भावना है।

हम सिर्फ बड़े शहरों को दिखाने या उसे ही और प्रगत या आगे की लाइनों में खड़ा करने का प्रयास कर रहे हैं। लेकिन असल में सहायता की जरूरत तो गरीब गांवों को है। गरीब मजदूर और समस्याग्रस्त किसान तो यहीं गांवों में अपना जीवन बिता रहा है। वो भी मजबूरी में। सरकार तो सिर्फ उनकी ओर चुनाव में जीतने के लिए काम आनेवाले वोटबैंक की रूप में देखता है। सभी ओर से हमेशा उनका शोषण ही होता आया है। सरकारी योजनाएँ गरीब जनता और किसानों के लिए सिर्फ नाम के ही होती हैं। उनका सही रूप से लाभ उन गरीब जनता या किसानों को कभी भी नहीं मिल पाया है। इसी कारण वह हमेशा समस्याग्रस्त और आत्महत्या करने के लिए मजबूर बनता रहा है। इस फिल्म में बहुत से पात्र हैं क्योंकि पूरे गांव को एक सामने लाने के प्रयास किया गया है। लेकिन असल रूप में यह सिनेमा किसानों की समस्या को प्रस्तुत करता दिखाई देता है। इसमें प्रमुख दो पात्र हैं जिनके इर्द-गिर्द सारी कथा घूमती है। वह पात्र हैं नाथा और बुधिया यह दोनों भाई-भाई हैं।

किसी कारण वश दोनों भाइयों की जमीन बहुत दिनों से बैंक के पास कर्ज की वजह से गिरवी थी। एक दिन बैंक का नोटीस आता है कि जल्द से जल्द कर्ज का भुगतान करा दे नहीं तो नत्था और बुधिया कि पुत्तैनी जमीन बैंक के नाम हो जाएगी। तभी दोनों भाई बहुत परेशान हो जाते हैं। दोनों भाई रोने लगते हैं। इस सिनेमा कहीं कहीं बीच में संवाद के



माध्यम से हास्य भी उत्पन्न होता है। लेकिन सिनेमा का असल मकसद लोगों तक किसान की समस्या को पहुंचाना ही है।

दोनों भाई परेशान होकर अपनी पुश्तैनी जमीन हाथ से न चली जाए इसलिए शहर चले जाते हैं। लेकिन वहाँ उनकी कोई नहीं सुनता और ऊपर से उन्हें यह सुनाया जाता है कि अगर कर्ज की किश्तें जल्दी नहीं अदा की गईं तो पूरी जमीन पर कानूनन कब्जा कर लिया जाएगा। दोनों अनपढ़, बेबस भाई मायूस होकर गाँव लौटते हैं। घर लौटते समय दोनों भाई रास्ते के शराब के ठेले पर शराब पीने के लिए जाते हैं और ऐसा सोचते हैं कि दिनभर कि थकान मीट जाएगी। यहाँपर किसान समस्याग्रस्त होने से वह शराब या अन्य गलत चीजों को अपना कैसे सकता है और अपने जीवन को और अधिक काली खाई में धकेलता है यह दिखाने का प्रयास किया है।

गाँव अन्य लोगों से दोनों को सलाह मिलती है कि किसी बड़े नेता से मिलकर अपनी समस्या का समाधान निकालें। वह दोनों गाँव के नेता भैया ठाकुर के पास मदद मांगने चले जाते हैं। वो बड़ा दबंग और गिरा हुआ होता है। वहाँ पर दोनों को किसी भी प्रकार की मदद नहीं मिलती उल्टा ताने सुनने को मिलते हैं। यहाँ उनके साथ हुए व्यवहार से गाँव में होनेवाले जातीयवाद को भी दिखाया गया है। नेता के लोगों ने दोनों भाइयों को ताने देकर जमीन बचाने के लिए आत्महत्या करने की सलाह दी। नेता और उसके लोग नत्था और बुधिया की परेशानी से स्वयं के पार्टी को आनेवाले चुनाव में किस प्रकार लाभ मिल सकता है यही सोचते हैं। राजनेताओं की स्वार्थी मानसिकता को दिखाया है। भैया ठाकुर उनसे कहता है- “देखो सरकार कुछ लिए बिगड़ कुछ

देती नहीं तुम एक चीज तो दे सकत हो, दे दो जान सरकार को”ⁱⁱⁱ उन्हें यह यकीन दिलाया जाता है की आत्महत्या करने से एक लाख रुपये परिवारवालों को मिल जाएगा और जमीन भी बैंक से वापस मिल जाएगी। यह सुनते ही नेता के सभी लोग जोर से हँसते हैं। लेकिन दोनों भाई तो अपनी परेशानी को कम होने के बजाए बढ़ते ही देखते हैं।

यही से नत्था और बुधिया आत्महत्या के बारे में सोचना शुरू करते हैं। अब दोनों इस बात की तह तक जाते हैं कि सरकार आत्महत्या के पश्चात एक लाख का मुआवजा देती है या नहीं। जब दोनों को यह बात निश्चित रूप से पता चलती है कि किसान आत्महत्या के पश्चात सरकार की ओर से एक लाख रुपए परिवारवालों को प्राप्त होते हैं। तब से वह आत्महत्या के बारे में गंभीर रूप से सोचना शुरू करते हैं।

धनिया जो नत्था की पत्नी है वह उनसे सवाल करती है कि ठाकुर ने कौनसा मार्ग बताया तब – “अब अम्मा की सेवा हो गई हो तो ये बता दो भाई ठाकुर ने का कही” उसपर बुधिया कहता है कि-“आत्महत्या करो ये कहिए” दोनों के संवाद से गाँव की भाषा में देहातीपन जो एक अलग ही अहसास दिलाता है और गाँव के चित्र और अधिक मजबूती से चित्रित करता है। बुधिया अपनी भाभी से मिलनेवाले ताने सह नहीं पता और अपनी माँ को जो चारपाई पर लेती होती है उसे गुस्से से सीधे न रखते हुए धीरे से पटक कर अपना गुस्सा जताता है और निकाल घर से जाता है।

दोनों भाई गाँजा भी पीते हैं। बुधिया कहता है कि- “हमारा बस चले तो अपनी जान देकर जमीन बचालू” दोनों भाई बहुत ही भावुक होते हैं। अब नत्था भाई को यह यकीन दिलाता है कि वह अपनी जान देगा। यह बात पूरे मीडिया के लोगों में आग कि तरह फ़ेल जाती है। उसके घर पर यह बात



उसकी पत्नी धनिया और माँ को पता चलता है तब धनिया कहती है- “कारे तेरा दिमाग खराब हो गयो का जिंदा रह के कछु करू नहीं अब मर के का करले हे”ⁱⁱⁱ

मीडिया के द्वारा अब इस बात को लेकर नेता, सरकार और सरकारी अफसर पर भी सवाल उठाए जाते हैं। एक सरकारी अधिकारी नत्था के घर उसे आत्महत्या से रोकने के लिए चला जाता है – “देखो लालबहादुर शास्त्री पुनर्वास योजना के तहत मैं तुझे एक ललबहादुर देता हूँ”,^{iv} और उसके हाथ में एक खाली हैंडपंप थमा देता है जो सिर्फ जमीन के ऊपर रखने के लायक होता है जमीन के अंदर से पानी निकालने के लिए कोई सामान या कोई खर्चा नहीं दिया जाता है। और ऊपर से वह अधिकारी कहता है- “अब तू नहीं मर सकता है अरे मरने वाला था तू शास्त्री जी ने बचा लिया”^v उसके जिंदगी का मज़ाक उड़ाकर चला जाता है।

अब एक के बाद एक नेता, अफसर और मीडिया के लोग पिपली नामक गाँव में अपनी अपनी दुकान चलाने आते हैं। नेता को आनेवाले चुनाव दिखाई देते हैं तो मीडिया सिर्फ टीआरपी बटोरने में लगी रहती है। गाँव में अधिक लोग जमा होने के कारण वह गाँव एक अंतर्राष्ट्रीय चर्चा का विषय बन जाता है। एक किसान या व्यक्ति की जिंदगी का किसी को कोई भी मोल नहीं होता है। सभी अपने स्वार्थ के कारण नैतिकता, करुणा और प्रेम जैसे मूल्यों को अपने पैरों तले दबाते हुए दिखाए देते हैं।

अंत में नत्था भी अपने फैसले को लेकर परेशान होता है और इसी दौरान किसी पार्टी के लोग उसका अपहरण करके उसे किसी गोदाम में रखते हैं। और वह गोदाम जला दिया जाता है लेकिन उस हादसे में एक पत्रकार की मौत हो जाती है और नत्था वहाँ से भागकर अपना घर-परिवार हमेशा

के लिए छोड़कर शहर में अपनी पहचान बदलकर रहता है। लेकिन लोगों को लगता है की नत्था ने आत्महत्या कर ली है। और सभी अपने स्वार्थ की रोटियाँ उस आग पर सेंकने के लिए लगे रहते हैं।

निष्कर्ष:

सिनेमा और साहित्य का गहरा संबंध है। यह एक दूसरे से बिलकुल अलग नहीं है। साहित्य ही सिनेमा, नाटक और रंगभूमि का आधार है। पिपली लाइव जैसी फिल्म के माध्यम से अनुषा रिजवी ने समाज में होनेवाले किसानों पर अन्याय और अत्याचार को बिलकुल सही ढंग से प्रस्तुत किया है। फिल्म में जातिवाद के मुद्दे को भी बड़ी सहजता से समाज के सामने उजागर करने का प्रयास किया है। नेता और मीडिया किसप्रकार अपने कर्तव्य को भूलकर स्वार्थ के कारण अंधे बनते हैं यह दिखाया है। यह आज भी प्रासंगिक है।

संदर्भ सूची:

1. Wikipedia. नवंबर 2013
2. www.youtube.com/@BrucereviewMovieExpanation. 2013
3. www.youtube.com/@amirkhanproductions, 2011
4. www.youtube.com/@dattasonawane5803, 2011
5. वही